उपसंहार

अभिनय वह कला है जिसके अंतर्गत कोई भी व्यक्ति किसी चरित्र की सम्पूर्ण विशेषताओं को अपने में आत्मसात करके अपने कायिक एवं वाचिक अभिनय के द्वारा उसकी प्रस्तुति करता है तथा उस चरित्र की बारीकियों को हर तरह से उभारता है। हर अभिनेता-अभिनेत्री के अभिनय का तरीका अलग-अलग होता है। कुछ अभिनेता एवं अभिनेत्रियों पर उनका खुद का चरित्र हावी रहता है। फलस्वरूप उनका अभिनय मोनोटोनस हो जाता है। जिस कारण वे हर चरित्र के साथ न्याय नहीं कर पाते हैं। अतः उनको सीमित रोल से ही संतोष करना पड़ता है। जबकि कुछ अभिनेता एवं अभिनेत्री ऐसे होते हैं जिन पर अपना चरित्र कभी भी हावी नहीं होता। वे चरित्र में डूबते हैं तो फिर चरित्र का होकर ही निकलते हैं। ऐसे ही अभिनेत्रियों में एक नाम है-शबाना आज़मी का, जिन्होंने अपने अभिनय के विविध स्वरूप से सिने प्रेमियों को अपनी तरफ से आकृष्ट किया एवं अभिनय की मिशाल कायम की, शबाना आज़मी मशहूर गीतकार एवं इफ्टा जैसी संस्था के सक्रिय सदस्य, सामाजिक कार्यकर्ता कैफ़ी आज़मी की बेटी हैं। जिस कारण उनमें बचपन से ही समाज, देश के लिए कुछ करने का जज़्बा समाया था।

शबाना आज़मी ने फिल्मों में अभिनय करने के साथ-साथ समाज में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई। उन्होने अपने गाँव की लड़कियों एवं महिलाओं के लिए कई कल्याणकारी एवं रोजगारपरक योजनाएँ चलायी। उन्होंने एड्स, शिशु मृत्युदर कम करने, बालिकाओं को शिक्षा देने तथा झुग्गी-झोपनियों में रहने वाले विस्थापित कश्मीरी पंडितों तथा लातूक भूकंप पीड़ितों के लिए लगातार काम किया। और समय-समय पर समाज के समसामयिक मुद्दों पर अपने विचार देती, एवं कार्य करती रही हैं जिसका परिणाम यह है कि उन्होंने सामाजिक उद्देश्य वाली बहुत सारी यथार्थवादी फिल्में की एवं

उनमें अभिनय कर उन फिल्मों को कालजयी बनाया। शबाना आज़मी ने अभिनय की जो मिशाल पेश की वह वर्तमान दौर की कई अभिनेत्रियों के लिए रोल मॉडल हैं जो इन्हें अपना आदर्श मानती हैं ।

शबाना आज़मी द्वारा निभाए गए कुछ फिल्मों के चरित्र हिन्दी सिनेमा के मिशाल माने जाते हैं

फिल्म 'अंकुर' में निभाए गए लक्ष्मी के चरित्र को उन्होने इतने सशक्त एवं धारदार ढंग से निभाया है, लक्ष्मी के हाव-भाव, संकोच, बोलने के ढंग को देखकर गाँव के कई दलित स्त्रियों की बरक्स याद आ जाती जाती है। जिनका पत्नी ताड़ी या दारू पीकर दिनभर पड़ा रहता है और वो दिनभर जीविका चलाती है। फिल्म 'अंकुर' के अभिनय पर शबाना आजमी को उस वर्ष का 'फिल्म फेयर अवार्ड' एवं 'राष्ट्रीय पुरस्कार' मिला।

फिल्म 'अर्थ' में निभाए गए पत्नी के चरित्र को शबाना ने बड़े सशक्त ढंग से निभाया है जो प्रेमिका के द्वारा ठुकरा दिए जाने पर अपने पति को पुनः स्वीकार नहीं करती है और न ही वह रोना-धोना करती है। वह आपने आदर्शों पर अपनी जिंदगी जीती है। पत्नी के अद्भुत चरित्र को बहुत सराहा गया। सशक्त अभिनय के लिए उन्हे उस वर्ष फिल्म 'फेयर पुरस्कार' भी मिला।

फिल्म 'फायर' अपने बोल्ड विषय के कारण विवादों में रही। कई लोगों ने राधा (शबाना) के इस रोल को करने की आलोचना भी की पर शबाना ने फायर में स्त्री समलैंगिक जैसे मुद्दे के होते हुए भी अभिनय किया। यह उनके अभिनय के अटूट लगाव एवं स्वयं के सशक्त आत्मसाहस का परिणाम था जिसके लिए संसद में उनके खिलाफ अनैतिक टिप्पणी का सामना करना पड़ा। फिल्म में शबाना ने राधा के चरित्र को जितनी मजबूती से निभाया वह काबिल-ए-तारीफ है।

फिल्म 'गॉडमदर' में शबाना के द्वारा निभाया गया रांबी बेन का किरदार हिंदी सिनेमा के सशक्त स्त्री किरदारों में गिना जाता है। इस फिल्म में शबाना ने अपने बोलने, चलने एवं आँखों की भंगिमाओं के के द्वारा जो प्रस्तुति की है वह अन्यत्र दुर्लभ है। रांबी बेन का सशक्त चरित्र शाबाना आज़मी ने अपने दमदार अभिनय द्वारा और भी सशक्त बना दिया है। जिसके एक-एक अदाओं को देखकर दर्शक दाँतों तले अंगुली दबा ले।

इन फिल्मों के अलावा निशांत, स्वामी, जूनून, स्पर्श, मंडी, मासूम, खंडहर, पार, अवतार, अंजुमन, मकड़ी आदि जैसी फिल्मों में भी उनके द्वारा सशक्त एवं विविधतापूर्ण रोल निभाया गया जिसको सुधि सिने-दर्शकों ने बहुत सराहा।

शबाना आज़मी आज भी अपने अभिनय से फिल्मों में एवं सक्रिय भागीदारिता से समाज में लगीं हुई हैं। हाल ही की आई उनकी सशक्त चरित्र वाली कुछ फिल्मों एवं 'मिजवा वेल फेयर' के तहत कराए गए उनके 'रैम्प फॉर मैन फॉर द वुमन' जैसे कार्यक्रम उनकी दोनों तरह की उपस्थिति को दर्शाते हैं।

शबाना आज़मी ने अपने जीवन में सामाजिक कार्यों एवं विभिन्न चरित्रों के माध्यम से जो अनुभव संपदा अर्जित की है उसका लाभ आने वाली पीढ़ी को उनके अभिनय, लेखन एवं कार्यों से लगातार मिलता रहे हम यही आशा करते हैं। भविष्य में उनके द्वारा और भी ऐसे कई मिशाल कायम जाएँ जिनको आने वाली पीढ़ियाँ युगों-युगों तक याद करें। उनके सुखद भविष्य की कामना करते हुए हम उनके लंबी उम्र की दुआ करते हैं...!

***

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. ओझा ,अनुपम ,भारतीय सिने सिद्धान्त ,राधाकृष्ण ,नई दिल्ली ,2009
2. कुमार, अरुण, सिनेमा और हिंदी सिनेमा,
3. जोशी ,ललित , बालीवुड पाठ,वाणी प्रकाशन ,नई दिल्ली ,2012
4. दिलचस्प ,हिन्दी सिनेमा के 100 वर्ष ,एन. बी.टी. ,नई दिल्ली ,2009
5. पारख ,जवरीमल्ल ,साझा संस्कृति ,सांप्रदायिक आतंकवाद और हिन्दी सिनेमा ,वाणी प्रकाशन ,2012
6. पारख,जवरीमल्ल,लोकप्रिय सिनेमा एवं सामाजिक यथार्थ, अनामिका पब्लिसर्स, नई दिल्ली, 2001
7. पारख,जवरीमल्ल,हिन्दी सिनेमा का समाजशास्त्र ,ग्रंथ शिल्पी ,नई दिल्ली ,2006
8. प्रसाद ,कमला ,फिल्म का सौन्दर्यशास्त्र और भारतीय सिनेमा ,शिल्पायन ,दिल्ली,2010
9. बट्ट, महेश, जिद्द जीतने की, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
10. ब्रह्मात्मज, अजय ,सिनेमा की सोच ,वाणी प्रकाशन ,2006
11. ब्रह्मात्मज, अजय, सिनेमा-समकालीन सिनेमा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
12. भारद्वाज, विनोद, सिनेमा कल आज कल ,वाणी प्रकाशन ,नई दिल्ली 2006
13. रज़ा, राही मासूम, सिनेमा और संस्कृति ,वाणी प्रकाशन ,नई दिल्ली 2009
14. अग्रवाल, प्रह्लाद, हिन्दी सिनेमा-बीसवीं से इक्कीसवीं सदी तक, साहित्य भंडार, इलाहाबाद, 2009
15. चड्ढा, मनमोहन, हिंदी सिनेमा का इतिहास, सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990

16. Prasad, M.Madhav,Idiology of the Hindi Film,Oxford University press, New Delhi

पत्र-पत्रिकाएँ

1. ओझा ,सीमा (संपा),आजकल (सिनेमा के सौ बरस),आजकल प्रकाश विभाग ,नई दिल्ली ,अक्टूबर -2012
2. कुमार ,मनोज (संपा),समागम (सिनेमा सौ साल),शिवाजी नगर ,भोपाल -16,अंक -1,फ़रवरी -2012
3. प्रसाद, कमला (संपा), वसुधा, निरालानगर, भोपाल , सिनेमा विशेषांक -2012
4. मिश्र ,अशोक ,(संपा),बहुवचन ,सिनेमा के सौ साल ,म.ग.आ।हिन्दी विश्व.,वर्धा प्रकाशन ,वर्धा ,2013
5. यादव ,राजेंद्र (संपा), हँस ,हिन्दी सिनेमा के सौ साल, नई दिल्ली ,अंक –फ़रवरी 2013
6. राय ,ऋत्विक (संपा),लमही (सिनेमा विशेषांक),विवेक खंड ,लखनऊ ,अंक -1 ,जुलाई – सितम्बर 2012

वेबसाइट

1. www.wikipedia.com
2. www.hindicinema.com
3. www.watch32.com
4. www.ask.com